सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-29 अंक-17 7 से 21 सितम्बर, 2014 मुख्य संपादक कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com मूल्य : 1 रुपया

कॉमरेड माओ त्से-तुंग लाल सलाम

26.12.1893 — 9.9.1976

''पूंजीवादी देशों में सर्वहारा वर्ग की पार्टी का काम है लम्बे कानूनी संघर्ष के जरिये मजदूरों को शिक्षित करना और शक्ति अर्जित करना तथा इस प्रकार पूंजीवाद को आखिर उखाड़ फेंकने के लिए तैयारी करना। इन सब देशों में पार्लियामेंट को एक मंच के तौर पर इस्तेमाल करने, आर्थिक और राजनैतिक हड़ताल संगठित करने, ट्रेड यूनियन संगठन निर्मित करने और मजदूरों को शिक्षित करने जैसे कानूनसम्मत लम्बे संघर्ष निर्मित करना ही महत्वपूर्ण विषय है। ....लेकिन क्रान्तिकारी अभ्युत्थान या युद्ध तब तक शुरू नहीं करना चाहिए जब तक पूंजीपति वर्ग वास्तव में ही असहाय नहीं हो गया हो ... और ग्रामीण जनता स्वेच्छा से सर्वहारा को मदद नहीं देने लगी हो।'' **– माओ त्से-तुंग**

प्रोब्लम्स ऑफ वार एण्ड स्ट्रेट्जी

आरएसएस नेता के कंठ से प्रतिध्वनित हुई जर्मन फासिस्टों की बोली – एसयूसीआई (सी)

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 20 अगस्त 2014 को जारी एक बयान में कहा : आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत द्वारा दिये गये इस अति दुष्टतापूर्ण बयान कि ''हिन्दुस्तान एक हिन्दू राष्ट्र है और हिन्दुत्व हमारे देश की पहचान है'' की हम घोर निन्दा करते हैं। यह सत्य को विकृत करने और देश में साम्प्रदायिक विभाजन को हवा देने वाला एक भड़काऊ बयान है। न तो पुनर्जागरणकाल के किसी भी मनीषी ने और न ही आजादी आन्दोलन के किसी भी नेता ने कभी हिन्दू राष्ट्रवाद की बात कही। वे सभी जिसके लिए लड़े और जिसकी वकालत की वह था धर्म, जाति, सम्प्रदाय या जातीयता से निरपेक्ष सभी भारतीयों की एकता के आधार पर भारतीय राष्ट्रवाद। संविधान भारत को एक धर्मनिरपेक्ष जनतांत्रिक राज्य घोषित करता है और यह दावा करना कि भारत एक विशेष धार्मिक समुदाय का है भारत को एक धर्मीय राज्य के रूप में पेश करने के तुल्य है, अतः यह संविधान का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन है। आरएसएस जिस हिन्दू राष्ट्रवाद का शुरू से ही प्रचार करता आ रहा है उसका मकसद अंध हिन्दूराष्ट्रवाद को हवा देना है जो सच्चे देशप्रेम का विरोधी है। मोहन भागवत के इस कथन से नाजी फिलॉसफी की बू आ रही है जिसने जर्मनों के आर्य नस्ल के होने की डींग हांकी थी और यहूदियों जैसे अन्य समुदायों के लोगों के खिलाफ नफरत फैलाई थी। अतः भागवत जिसका समर्थन कर रहे हैं वह फासीवादी विचारधारा के सिवा और कुछ नहीं है।

हम सदबुद्धिसम्पन्न सभी लोगों का आह्वान करते हैं कि वे निहित स्वार्थों के ऐसे घातक प्रतिक्रियावादी विचारों को खारिज कर दें, धर्मनिरपेक्ष जनतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित मेहनतकश भारतीयों की एकता को मजबूत करें और अपने निकृष्ट ऐजेण्डे को सिरे चढ़ाने के लिए गलत सिद्धांतों को प्रचारित करने वाले घोर साम्प्रदायिक तत्वों को जनता से अलग-थलग कर दें।

जनजीवन की ज्वलंत समस्याओं को लेकर विरोध प्रदर्शन

दिल्ली : राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार द्वारा अपनायी जा रही बिजली-पानी-शिक्षा-चिकित्सा सेवाओं के निजीकरण-व्यापारीकरण की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ 20 अगस्त को सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट), दिल्ली के कार्यकर्ताओं ने दिल्ली के उपराज्यपाल के कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारी तीस हजारी मेट्रो स्टेशन पर एकत्रित हुए और राजभवन की ओर बढ़े। वहां प्रदर्शन जनसभा में तब्दील हो गया। जनसभा को पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती, राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल, दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्यों कॉ. रमेशे पाराशर, प्राण शर्मा, मैनेजर चौरसिया व हरीश त्यागी ने सम्बोधित किया। एस. यू.सी.आई. (सी) दिल्ली के सचिव कॉमरेड प्रताप सामल के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमण्डल ने दिल्ली के माननीय उपराज्यपाल को एक ज्ञापन भी सौंपा।

कॉमरेड चक्रवर्ती ने कहा कि दिल्ली में पिछले 20 साल से, पहले बी.जे.पी. और बाद में कांग्रेस के कुशासन और उनकी जनविरोधी नीतियों के चलते आकाशछूती मंहगाई, बेरोजगारी, सभी क्षेत्रों में व्यापक ठेकेदारीकरण, बिजली-पानी-शिक्षा-चिकित्सा के निजीकरण, अनधिकृत कॉलोनियों को नियमित न किए जाने, सर्वव्याप्त भ्रष्टाचार और महिलाओं व बच्चों के खिलाफ बढ़ते अपराधों ने हालात को दमघोटू बना दिया है। लोगों ने आम आदमी पार्टी को बढ़-चढ़ कर वोट दिया था और आम आदमी पार्टी के पास लोगों को राहत पहुँचाने का पूरा मौका भी था। लेकिन जन लोकपाल बिल को एकमात्र मुद्दा बना कर जिन लोगों ने उसे सत्ता में बिठाया था उनकी राय लिए बिना ही केजरीवाल ने कुर्सी से त्यागपत्र दे दिया। इसने राज्य विधानसभा को निलम्बित रखने का निहित स्वार्थों को मौका दे दिया।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस-नीत यू.पी.ए. शासन के 10 सालों के दौरान बेरहम पूँजीवादी शोषण के खिलाफ लोगों के देशव्यापी विक्षोभ और आक्रोश का बीजेपी ने चतुराई से फायदा उठाया। नरेन्द्र मोदी को भावी प्रधानमंत्री के रूप में पेश करने के लिए देश के कॉर्पोरेट घरानों ने चौतरफा समर्थन दिया और उनके द्वारा नियंत्रित मीडिया द्वारा प्रोजेक्ट किए जाने के चलते बीजेपी पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में आ गई। हालाँकि, इसके सत्ता में बैठने के चन्द दिनों में ही

दिल्ली में सड़कों पर उतरे मेहनतकश लोग

मोदी-नीत बीजेपी सरकार का नितांत कॉर्पोरेटपरस्त चेहरा खुल कर सामने आ गया। सत्तासीन होते ही इसने प्रतिरक्षा उत्पादन, रेलवे, बीमा, बैंकों, सार्वजनिक प्रतिष्ठानों, सड़क, परिवहन, पानी, बिजली, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और कृषियोग्य भूमि को भी निजी हाथों में सौंपने का ऐलान कर दिया और इन क्षेत्रों को सीधे विदेशी निवेश के लिए खोल दिया। शपथ ग्रहण के तुरंत बाद बीजेपी की सरकार ने संसद, जिसका बजट सत्र चन्द दिनों में शुरू होने जा रहा था, को दरकिनार करते हुए रेलवे यात्री किराए और माल भाड़े में बेतहाशा वृद्धि कर दी, पेट्रोल, डीजल के दाम बढ़ा दिए और लोगों को और भी कड़वी दवाई की खुराक पीने के लिए तैयार रहने को कह दिया। आवश्यक वस्तुओं के दाम निरंतर बढ़ रहे हैं। मोदी के "अच्छे दिनों" का मजाक उड़ाते हुए लोग कहते हैं कि लोकसभा चुनावों के दौरान व्यापारियों तथा कॉर्पोरेट घरानों द्वारा इनके तथा इनकी पार्टी के लिए खर्च की गई भारी धनराशि को सूद सहित वसूलने के लिए इन्होंने खुली छूट दे दी है। दिल्ली में विधानसभा चुनावों को टालने और विधायकों की खरीद-फरोख्त के जरिये बहुमत जुटाने के इनके कथित प्रयासों से इस पार्टी का असली चेहरा उजागर हो गया है।

हाल के संसदीय चुनावों और इनसे मिले तजुर्बे ने लोगों को दिखा दिया है कि कांग्रेस और बीजेपी दोनों या इस मामले में कोई भी पार्टी या गठबंधन जो भी केन्द्र या राज्यों में सत्तासीन रहा है, उसने शासक-शोषक पूँजीपति वर्ग-टाटाओं, बिड़लाओं, अडानियों और अम्बानियों के स्वार्थ का ही वास्तव में प्रतिनिधित्व किया है। भारतीय पूँजीपति वर्ग की अति निष्ठावान और भरोसेमन्द इन पार्टियों में पूँजीपति वर्ग के प्रति अपनी निष्ठा को सिद्ध करने के लिए भूमण्डलीकरण, निजीकरण की नीतियों को लागू करने और भारतीय अर्थव्यवस्था को उनके लिए खोल देने की होड़ लगी हुई है। पूँजीपति वर्ग को बाजार और आर्थिक मंदी के आसन्न खतरे से बचाने के लिए संकट का तमाम बोझ आम आदमी के कंधों पर लादा जा रहा है। संसद में मोदी सरकार द्वारा पेश किया गया बजट और अब तक घोषित की गई नीतियाँ ठीक इसी चीज को प्रतिबिम्बित करती हैं।

अपनी जायज और जनवादी मांगें मानने के लिए सरकार को बाध्य करने की खातिर एक जोरदार जनआंदोलन संगठित करने के अलावा आम जनता और मजदूर वर्ग के पास दूसरा कोई रास्ता नहीं बचा है। देशभर में ऐसा एक आन्दोलन संगठित करने का एसयूसीआई(सी) भरसक प्रयास कर रही है। कॉमरेड चक्रवर्ती ने पार्टी द्वारा चलाये जा रहे देशव्यापी आन्दोलन को मजबूत करने की सभा में उपस्थित लोगों से अपील की।

केरल में आयोजित कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति सभा में

पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी का भाषण

केरल के एर्नाकुलम जिले के अंगमाली में सीएसी सभागार में आयोजित सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड माणिक मुखर्जी

(5 अगस्त 2014 को केरल के एर्नाकुलम जिले के अंगमाली में सीएसी सभागार में आयोजित सभा की अध्यक्षता पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य और राज्य सचिव कॉमरेड सी.के. लुकोस ने की। राज्य सचिव मण्डल सदस्य कॉमरेड वी वेणुगोपाल ने भी सभा को सम्बोधित किया। सभा से पहले शहर में एक शानदार जुलूस निकाला गया। इसमें सैकड़ों पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने हिस्सा लिया जिनमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे।)

कॉमरेड्स,

हमारे प्रिय शिक्षक और पथ प्रदर्शक कॉमरेड शिवदास घोष के निधन के बाद से 5 अगस्त के दिन को हम इस सावधानी के साथ हर वर्ष मनाते हैं कि यह एक औपचारिकता भर न बन जाएं। हम 5 अगस्त मनाते हैं लेकिन उद्देश्य क्या है? पहला है, कॉमरेड शिवदास घोष के जीवन-संघर्ष और शिक्षाओं को जनता के बीच ले जाना। दूसरा है, हमारे पार्टी कॉमरेडों को यानी हमें कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं और उनके जीवन-संघर्ष से बार-बार सीखने का प्रयास करना चाहिए। कॉमरेड शिवदास घोष ने जब अपना राजनीतिक संघर्ष शुरू किया तब वे बहुत छोटे थे। उस उम्र में ही उन्होंने निष्कर्ष निकाल लिया था कि हमारे देश में तथाकथित कम्युनिस्ट पार्टियाँ–सीपीआई, आरएसपी और अन्य पार्टियाँ असल कम्युनिस्ट पार्टियाँ नहीं थीं बल्कि सोशल डेमोक्रेटिक पार्टियाँ थीं। उनमें से बहुतों ने प्रयास किया लेकिन कोई सच्ची कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में विकसित नहीं हो सकी। कॉमरेड लेनिन की एक शिक्षा है कि एक क्रान्तिकारी सिद्धान्त के बिना, एक क्रान्तिकारी पार्टी के बिना, क्रान्ति नहीं हो सकती है। कॉमरेड शिवदास घोष इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि देश में कोई सच्ची कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है इसलिए भारतीय समाज को पूँजीवाद से समाजवाद में बदलने के लिए हमें एक असल कम्युनिस्ट पार्टी की जरूरत है और ऐसी एक कम्युनिस्ट पार्टी को विकसित करने की जरूरत है। इस विचार के साथ ही उन्होंने संघर्ष शुरू किया।

कॉमरेडस! आप कह सकते हैं कि तीसरे बैच के रूप में हम पार्टी में शामिल हुए। प्रथम बैच में कॉमरेड शिवदास घोष, कॉमरेड नीहार मुखर्जी, कॉ. सचिन बैनर्जी, कॉ. सुबोध बैनर्जी व अन्य चन्द साथी ही थे। फिर दूसरे बैच में कॉमरेड सुकोमल दासगुप्ता, कॉमरेड आशुतोष बैनर्जी और कुछ अन्य कॉमरेड उनके साथ मिले थे। आज आप देख सकते हैं कि तीसरा बैच कॉ. प्रभाष घोष, मैं और अन्य कॉमरेड हैं। हम उस समय शामिल हुए जब पार्टी बहुत ही छोटी थी और लोग कॉमरेड घोष का मजाक उड़ाया करते थे कि यह खुद को इस देश का लेनिन समझता है। उस समय जब स्टालिन जिन्दा थे, अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन ने भी सीपीआई को मान्यता दी थी। इसलिए हमें तर्कों का सामना करना पड़ता था कि क्या कॉमरेड शिवदास घोष स्टालिन से भी बड़े हैं। जब स्टालिन ने सीपीआई को मान्यता दी है, आपके शिवदास घोष नहीं देते हैं और कहते हैं कि यह एक सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी है। इस तरह हमें बहुत से सवालों का सामना करना पड़ता था और हमें राजनैतिक तौर से उनका मुकाबला करना पड़ता था। आज हम मानते और सोचते हैं कि उन मुकाबलों ने निश्चित तौर से हमारे विकास में बहुत मदद की थी।

हमें कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं का अध्ययन और पुनः अध्ययन करना है और जानना है कि कैसे उन्होंने अपना जीवन-संघर्ष संचालित किया था। यह बिन्दु बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जहाँ तक हम जानते हैं, विश्व में विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों के विकास के मद्देनजर, विशेषकर विभिन्न पार्टियों के गठन के मुकाबले हमारी पार्टी एक ऐसी परिस्थिति में विकसित हुई जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। उस समय हमारे पास कुछ नहीं था सिर्फ कॉमरेड शिवदास घोष के नेतृत्व में चन्द नौजवान थे। उनके पास पैसा नहीं था, उनको कोई सामाजिक समर्थन नहीं था और कोई मीडिया बैकिंग नहीं थी, यहाँ तक कि उन्हें दो वक्त का खाना तक नसीब नहीं होता था। ऐसी एक स्थिति में उन्होंने अपना संघर्ष शुरू किया था। उस समय हमारे नेताओं कॉमरेड शिवदास घोष और नीहार मुखर्जी के कुछ सीनियर लोग कहते थे कॉमरेड शिवदास, कॉ. नीहार तुम सिर्फ मरने जा रहे हो। इस तरह से किसी भी देश में कम्युनिस्ट पार्टी का निर्माण नहीं हुआ है। कॉमरेड शिवदास घोष का जवाब आप जानते हैं–'यदि मुझे मरना है तो लोगों को पुकार-पुकार कर यह बताते हुए और समझाते हुए मरूँगा कि हमारी लाइन सही है, इसे समझने का प्रयास करिए और इसका अनुसरण करने का प्रयास करिए और इसी से अंततः कुछ परिणाम निकलेगा। यदि हमारी लाइन सही है और यदि हमारा विश्लेषण सही है, तो कुछ लोग आएंगे और इस लाइन का अनुसरण करेंगे और इस लाइन को आगे ले जाएंगे।' आज क्यों मैं इसका हवाला दे रहा हूँ इसलिए कि वर्तमान में भारत में कैडरों के हिसाब से हमारी पार्टी निश्चित ही सबसे बड़ी कम्युनिस्ट पार्टी है। हमारी कोई प्रेस बैंकिंग नहीं है, मंत्री या विधायक या सांसद नहीं हैं; लेकिन प्रत्येक राज्य में हमारी पार्टी बहुत ही सक्रिय और संघर्षरत है और जनआन्दोलनों व वर्ग संघर्षों को विकसित कर रही है। हमारे पास बहुत से पूर्णकालिक कॉमरेड हैं जिन्होंने अपना कैरियर त्याग दिया है, वे एक साथ रह रहे हैं और पार्टी सैण्टरों का निर्माण कर रहे हैं। वे सामूहिक जीवन और सामूहिक संघर्ष को अपना रहे हैं। यह हमारे देश में एक नई परिघटना है जो धीरे-धीरे बढ़ रही है।

आज दुनियाभर में सोवियत यूनियन और पूर्वी यूरोपीय देशों में प्रतिक्रान्ति के बाद विभिन्न देशों की बहुत सी कम्युनिस्ट पार्टियों को अपना बोरिया बिस्तर समेटना पड़ा और अब उनका अतित्व दाव पर लगा हुआ है। लेकिन हम बढ़ रहे हैं। क्यों? मैं कोई डींग नहीं हांक रहा हूँ, 'सचमुच हम बढ़ रहे हैं।' लेकिन मैं दर्शाना चाहता हूँ कि ऐसा क्यों है। इसका कारण है विचारधारा, क्रान्तिकारी राजनीति, मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सही समझदारी जिसे हमारे प्रिय नेता कॉमरेड शिवदास घोष ने विशेषीकृत किया है यानी मार्क्सवादी-लेनिनवाद-शिवदास चिन्तनधारा वह मुख्य हथियार है जिससे हम संघर्षपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा पाते हैं और जिसकी वजह से जनता हमारा समर्थन करती है। सिद्धान्त और विचारधारा बहुत महत्वपूर्ण हैं। एक समय हम सुनते थे कि 'आप बहुत छोटी पार्टी हैं।' आप सही हो सकते हैं लेकिन कुछ नहीं कर सकते हैं। आपकी कोई ताकत नहीं है। हमारा सीधा सा जवाब था–यदि हम सही हैं तो लोग आएंगे। लोग हमें स्वीकारेंगे और तब हम एक विकसित पार्टी होंगे और हमारी गतिविधियाँ देश भर में फैल जाएंगी। यह हमारे सही होने पर निर्भर करता है और आज यह सिद्ध हो गया है, न केवल भारत में बल्कि मैं कह सकता हूँ कि भारत के बाहर भी शिवदास घोष के विचार फैल चुके हैं और जबरदस्त प्रभाव डाल रहे है और पहले ही डाल चुके हैं। मैं कह रहा हूँ जबरदस्त प्रभाव। इसलिए इनसे हमें एक चीज सीखनी है कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष विचारधारा को समझने के लिए जीवन के तमाम पहलुओं को समाहित करते हुए हमें अपने संघर्ष को जारी रखना चाहिए। इस प्रकार हम जन आन्दोलनों और वर्ग संघर्षों को विकसित करने में सक्षम होंगे और केवल हम ही भारतीय जनता को उनकी मुक्ति की ओर ले जा सकते हैं, कोई दूसरी पार्टी यह करने में सक्षम नहीं है।

पाँच अगस्त के दिन हम अपने महान नेता शिवदास घोष को निष्ठापूर्वक याद करते है। 52-53 साल की उम्र में उनका देहान्त हो गया था। यह अति असामयिक मृत्यु थी। लेकिन उनका जीवन-संघर्ष और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की उनकी अति विकसित समझदारी न केवल हमारे जीवन में बल्कि हमारे देश के सर्वहारा के लिए भी एक खजाना बन गई है। अतः इसकी मदद से हमारी पार्टी एसयूसीआई(सी) समाजवाद कायम करने के लिए पूँजीवाद के खिलाफ संघर्ष में जनता को नेतृत्व प्रदान करेगी। इन तमाम चीजों की चर्चा हम कर रहे हैं। क्योंकि हम समझते हैं कि यह बहुत जरूरी है। यदि हम कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों, जो कि आज का मार्क्सवाद है, का अध्ययन और पुनः अध्ययन नहीं कर सके तो हम हमारे देश और दुनिया भर में विकसित हो रही जटिल राजनीतिक परिस्थिति को समझने में सक्षम नहीं हो सकेंगे। यदि हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद के दार्शनिक सिद्धान्तों को सही-सही न समझे तो रोजमर्रा के राजनीतिक सवालों को हल करने में सक्षम नहीं हो सकेंगे। हमें यह याद रखना चाहिए। जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन और माओ के बाद कॉमरेड शिवदास घोष ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के ज्ञान भण्डार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिनमें से कइयों को पार्टी द्वारा अभी भी दुनिया के सामने लाना बाकी है। हम सोचते हैं कि आज यह बहुत जरूरी है। मै पाता हूँ कि विश्व साम्यवादी आन्दोलन फिलहाल बहुत सारे पहलुओं से अव्यवस्थित है। वे बहुत से सवालों का जवाब नहीं दे पा रहे हैं जो विशेषकर विकसित पश्चिमी समाज में पैदा हो रहे हैं। ये तमाम तबाही ला रहे हैं और कुछ लोगों के चिन्तन को इस ओर ले जा रहे हैं कि मार्क्सवाद जीवन की बहुत सी जटिल परिघटनाओं का जवाब नहीं दे सकता। यह गलत समझदारी है और इसकी वजह यह है कि उन्हें अभी तक महान मार्क्सवादी नेता कॉ. शिवदास घोष के बारे में जानकारी नहीं है। हम उनके तमाम भाषणों को प्रकाशित नहीं कर सके हैं। दर्शन, संस्कृति, नीति-नैतिकता, सैक्स और अन्य विषयों पर उनके भाषण नहीं छपे हैं। ये बहुत महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं। हम अपराधबोध महसूस करते हैं कि हम उन्हें सही तरीके से प्रकाशित नहीं कर सके हैं। उनके भाषणों का सम्पादन हो रहा है और हम जल्द उन्हें प्रकाशित करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। मैं एक घटना का जिक्र करूँगा। एक समय कम्युनिस्ट सर्कल में बहस चली थी। रोजा लग्जमबर्ग और अन्य कॉमरेडों के बीच बहस हो रही थी कि सैक्स की स्वतंत्रता की धारणा और जिसे सैक्स की स्वतन्त्रता और यौन दासता कहा जाता है, इसके बारे में

(शेष पृष्ठ 3 पर)

कॉ. माणिक मुखर्जी का भाषण

(पृष्ठ 2 का शेष)

कम्युनिस्टों का नजरिया क्या होना चाहिए। बहस के बाद वे लेनिन के पास गए। जब लेनिन ने उत्तर दिया तो साथ ही यह भी कहा कि 'यह बहुत ही कठिन विषय है यद्यपि महत्त्वपूर्ण है। यह मनुष्यों के लिए एक महत्त्वपूर्ण विषय है जो रोजमर्रा के जीवन का अभिन्न हिस्सा है। एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को ढालने और सवांरने में सैक्स एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मैं अध्ययन कर रहा हूँ। मैंने पहले ही इस कुछ नोट्स लिखे हैं और मुझे उम्मीद है कि बहुत जल्द ही इस विषय पर कुछ लिखने में मैं समर्थ हो जाऊँगा।' जो हमारे लिए, मौजूदा पीढ़ी के कम्युनिस्टों के लिए कितना बड़ा खजाना और मार्ग दर्शन हो सकता था लेकिन दुर्भाग्यवश यह काम पूरा होने से पहले ही उनका निधन हो गया। इसके बाद इस विषय की किसी भी कम्युनिस्ट अथोरिटी ने व्याख्या नहीं की है। परिणास्वरूप अब एक भ्रान्ति व्याप्त है कि सैक्स सम्बंधी मामले पर मार्क्सवाद का कोई निश्चित रुख नहीं है। लेकिन हम शिवदास घोष के छात्र जानते हैं कि कुछ चुनिन्दा कॉमरेडों के साथ एक मीटिंग के दौरान उन्होंने कुछ गाइडलाइन दी थी। लेकिन हम अभी तक इसे प्रकाशित नहीं कर सके हैं। यदि हम इसे प्रकाशित कर सकें तो यह मार्क्सवाद पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण गाइडलाइन होगी कि सैक्स के मामले में नजरिया क्या होना चाहिए। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण और जरूरी है। अत: कॉमरेड लेनिन जिसे पूरा नहीं कर सके, एक विषय जिस पर वे नोट्स ले रहे थे। उसे कॉमरेड घोष ने पूरा किया। वह भाषण और उसका लिप्यंरतण हमारे पास है और हम उसे प्रकाशित करने की जिम्मेदारी ले रहे हैं। यह उन सभी के लिए एक महान खजाने के रूप में काम करेगा जो असल मार्क्सवादी बनने के संघर्ष में गंभीरतापूर्वक लगे हुए हैं।

कॉमरेड घोष किसी विषय पर चर्चा से पहले वे उस विषय पर कॉमरेडों से जहाँ कहीं भी मौका मिलता चाहे आफिस हो, कम्यून हो या अन्य जगह विचार-विमर्श किया करते थे। उन चर्चाओं के माध्यम से ही कॉमरेड घोष कॉमरेडों के चिन्तन और तर्क करने की विधा को विकसित करते थे। उन्होंने अंतिम समय तक इस प्रक्रिया को बरकरार रखा। उन्होंने कहा था कि यह और कुछ नहीं बल्कि सामूहिक सीखना है जिसमें वे कॉमरेडों से भी ज्ञान प्राप्त करते थे। ऐसी एक प्रक्रिया में वे कॉमरेडों के तर्क सुनते थे। पार्टी के सामने उन तर्कों को रखने से कॉमरेड घोष ने बहुत से स्टडी सर्कल संचालित किए थे। उन्होंने उन सभी का व्यक्तिगत रूप से संचालन किया था। वह पार्टी के गठन का समय था। स्टडी सर्कल और स्टडी क्लास एक ही चीज नहीं है। स्टडी क्लास में नेता और कार्यकर्ता एक साथ मिलते हैं और नेता मार्क्सवादी-लेनिनवाद पर केन्द्रित विभिन्न विषयों पर सम्बोधित करते हैं। इसके बाद सदन से सवाल उठाए जाएंगे। फिर इन सवालों पर नेताओं द्वारा स्पष्टीकरण दिया जाएगा, एक स्टडी क्लास की यही प्रक्रिया है। दूसरा तरीका उन्होंने जो लागू किया, वह था नेगेटिव डायलेक्टिक्स का यानी स्टडी सर्कल का। यह प्रक्रिया क्या थी? एक स्टडी सर्कल में हम पहले से ही तय दिन पर मिलते थे और फिर कॉमरेड घोष हमें किसी भी विषय पर सवाल रखने के लिए कहते थे वह चाहे राजनीति हो, अर्थशास्त्र या खुद जीवन हो। कॉमरेड तब अपने सवाल रखते थे इसके बाद कॉमरेड घोष इन सवालों पर कॉमरेडों से अपने बीच चर्चा करने के लिए कहते थे। कॉमरेड तर्क ओर प्रति तर्क रखते और अन्त में कॉमरेड घोष इन सवालों पर कॉमरेडों से अपने बीच चर्चा करने के लिए कहते थे। कॉमरेड तर्क और प्रति-तर्क रखते और अन्त में कॉमरेड घोष हस्तक्षेप करते और चर्चाओं का समापन करते थे। यह बहुत ही उचित द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया थी। कॉमरेडों के बीच ये वार्तालाप उनकी सैद्धान्तिक समझदारी को विकसित और धारदार करने में मददगार होते थे। इसके आधार पर वे उन्हें उचित तरीके से आम जनता के सामने रखने में सक्षम होते थे। कॉमरेड घोष द्वारा शुरू की गई इस प्रक्रिया ने इस तरह कॉमरेडों को मार्क्सवाद-लेनिनवाद की एक उन्नत समझदारी विकसित करने के काबिल बनाया। इसी वजह से राजनीतिक शिक्षण शिविर और स्टडी क्लास के अलावा कॉमरेड घोष ने स्टडी सर्कल लगाने पर बहुत महत्व दिया। इसलिए मैं जोर देता हूँ कि न केवल हमें कॉमरेड शिवदास घोष के साहित्य को बार-बार पढ़ना चाहिए बल्कि उन्हें नेगेटिव डायलेक्टिक्स की प्रक्रिया के जरिए भी पढ़ना चाहिए, स्टडी सर्कलों के जरिए, तर्कों और प्रति तर्कों के जरिए चर्चा की एक प्रक्रिया अपनायी जाए जिसका समापन बाद में नेतृत्व द्वारा किया जाए। इससे पार्टी में मार्क्सवाद-लेनिनवाद को जानने का जबरदस्त प्रेरणादायक माहौल तैयार होगा। कॉमरेड शिवदास घोष इसी पद्धति का अनुसरण किया करते थे।

कॉमरेड घोष अनपढ़ किसानों के लिए भी राजनीतिक शिक्षण शिविरों का संचालन किया करते थे। वे इस बात पर बहुत जोर देते थे कि ये किसान जो वर्ग संघर्षों और जन संघर्षों में लगे हुए हैं इन्हें द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद जानने की जरूरत है और इन्हें शिक्षित करना हमारा परम दायित्व बनता है। द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के ज्ञान के बिना एक मजदूर खुद को जनता के एक संगठक के रूप में तब्दील नहीं कर सकता है। इसकी खातिर उन्होंने इन तमाम पद्धतियों और प्रक्रियाओं का इस्तेमाल किया। अब हम इसे जरूरी समझते हैं कि पार्टी में हमारे कॉमरेडों को शिक्षित करने के लिए हमें इन पद्धतियों का इस्तेमाल करना चाहिए। पुस्तकें उपलब्ध हैं, हमें उन्हें पढ़ना और पुन: पढ़ना चाहिए और चर्चाओं के स्टडी क्लासों और स्टडी सर्कलों के जरिए, नेगेटिव डायलेक्टिक्स की प्रक्रिया के जरिए उन्हें पढ़ना चाहिए। इन गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य पार्टी कॉमरेडों का स्तर ऊँचा उठाना होना चाहिए। राजनैतिक और सांस्कृतिक स्तर के साथ-साथ नीति-नैतिकता का स्तर भी ऊँचा उठाना चाहिए। इसके बिना क्रान्ति को नेतृत्व देना असंभव है। मात्र राजनीति से यह नहीं हो जाएगा, नैतिक-सांस्कृतिक पहलू महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। हालांकि इसमें संदेह नहीं कि ये क्रान्तिकारी राजनीति की उपज हैं, यह जरूरी है कि हम वांछित नैतिक-सांस्कृतिक स्तर हासिल करें। कॉमरेड घोष ने व्यक्तिवाद-बुर्जुआ व्यक्तिवाद के पहलू पर अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन की आलोचना की थी। साम्यवादी आन्दोलन में बुर्जुआ व्यक्तिवाद के अवशेषों ने आधुनिक संशोधनवाद के पनपने के बीज बोए थे। इसलिए हमें इसका मुकाबला करना है। हमारी पार्टी में कॉ. शिवदास घोष के विचारों की मदद से इसका मुकाबला करने का प्रयास कर रहे हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को जानने और समझने में यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहलू है।

पिछले आम चुनावों के बाद नरेन्द्र मोदी पूर्ण बहुमत के साथ सत्तासीन हुए हैं। आजादी के बाद तीस वर्षों तक एक ही पार्टी यानी कांग्रेस का शासन रहा। इसके बाद गठबंधन का युग आया जहाँ किसी एक पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिला, कांग्रेस को भी नहीं। केन्द्र और राज्यों में गठबंधन थे। इस तरह से भारतीय पूँजीपति वर्ग ने धीरे-धीरे भारतीय राजनीति में दो दलीय प्रणाली स्थापित करने का प्रयास किया। एक ऐसी दो दलीय प्रणाली के जरिए वे पूँजीपति वर्ग के स्वार्थ पूरा करना चाहते हैं। हालांकि संसदीय जनतंत्र का मुखौटा बरकरार रखते हुए उन्होंने कम से कम एक स्तर तक प्रशासनिक फासीवाद को हासिल कर लिया है। इस बार नरेन्द्र मोदी पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में आ गये। ऐसी एक स्थिति जिसका बहुत सी पार्टियाँ अनुमान नहीं लगा सकीं। लेकिन ऐसा ही हो गया। कैसे यह घटना चक्र घटित हुआ? हम जानते हैं कि जिस पार्टी से नरेन्द्र मोदी सम्बंधित हैं वह बीजेपी एक हिन्दू साम्प्रदायिक पार्टी है। इस हिन्दू साम्प्रदायिक पार्टी को भारतीय शासक वर्ग द्वारा सामने लाया गया जिसके फलस्वरूप उन्हें पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ। मैं यह इस वजह से कह रहा हूँ कि हमें लोगों को आगाह करना चाहिए कि बीजेपी धीरे-धीरे अपनी सत्ता को सुदृढ़ करने का प्रयास कर रही है। वह अपने मूल संगठन आरएसएस जो एक फासीवादी संगठन है उसको यथासंभव सभी जगह संगठित करने का प्रयास करेगी। उनका मुख्य उद्देश्य होगा साम्यवाद, साम्यवादी विचारों, मार्क्सवाद-लेनिनवाद का मुकाबला करना और अंतत: इस देश से कम्युनिस्टों को नेस्तानाबूद कर देना। आरएसएस और इसकी राजनैतिक शाखा बीजेपी का यही विचार है। इसलिए, इस चुनाव ने एक बहुत ही खतरनाक परिस्थिति पैदा कर दी है। ऐसा क्यों हुआ? हम जानते हैं कि जन आन्दोलन और वर्ग संघर्ष के विकास की खातिर भारत में कार्यरत वाम और जनवादी पार्टियों की एकता का आग्रह हम लम्बे अर्से से करते आ रहे हैं। यह एकता चुनावी मकसद के लिए नहीं होनी चाहिए। आम तौर पर यह देखा गया है कि पार्टियाँ चुनाव के मकसद से इकट्ठा होती हैं, एक प्लेटफॉर्म बनता है जिससे कोई चुन कर सत्ता में जाता है और सरकार बनाता है। लेकिन हम जिस एकता पर जोर दे रहे हैं वह है जन आन्दोलनों और वर्ग संघर्षों को विकसित करने के उद्देश्य के लिए एकता, जिसके आधार पर, यदि चुनाव आ जाएं तो हम चुनाव भी लड़ेंगे। फिर भी, जन आन्दोलनों और वर्ग संघर्षों को निर्मित एवं मजबूत करने के लिए प्रोग्राम होना चाहिए। एक लम्बे अर्से से ये जन आन्दोलन और वर्ग संघर्ष नदारद हैं। सिर्फ चुनाव लड़ने के लिए कितने ही गठबंधन बने और टूट गए। आप को यह ध्यान में रखना होगा कि मनहूस हिन्दू फासीवाद के प्रसार पर अंकुश लगाने की जरूरत है क्योंकि यदि इसको पनपने दिया तो यह जन आन्दोलनों और वर्ग संघर्षों को तबाह कर देगा और गैर-हिन्दुओं के बड़े तबके, विशेषकर मुसलमानों को निशाना बनाया जाएगा। आप पाते हैं कि मुसलमान पहले ही डरे हुए हैं। इन चुनावों के बाद एक तरह का हिन्दू पुनरुत्थान सामने आ रहा है। हमारी पार्टी बहुत गंभीरता से महसूस कर रही है कि वाम ताकतों की एकता जिसके लिए लम्बे अर्से से हम आग्रह करते आ रहे हैं, की जगह हमें और भी ज्यादा व्यापक एकता कायम करनी चाहिए। हमें इस पुनरुत्थान के प्रसार पर अंकुश लगाने और फासीवादी ताकतों के विकास को रोकने के लिए तमाम जनवादी ताकतों को एकजुट करना चाहिए। यह एकता आन्दोलन के लिए होनी चाहिए क्योंकि आन्दोलन, जन आन्दोलनों और वर्ग संघर्षों के बिना फासीवाद की तरफ बढ़ते इस रुझान को रोका नहीं जा सकेगा। चुनावों के बाद की ऐसी एक स्थिति में हमें जनता से, लोगों से और तमाम वाम तथा जनवादी ताकतों से अपील करनी चाहिए कि वे फासीवादी ताकतों के खिलाफ संघर्ष में एकजुट हो जाएं। आने वाले दिनों में हमें यह नारा बुलन्द करना चाहिए और इस नारे के साथ हमें यथासंभव व्यापकतम एकता कायम करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा है फासीवाद का खतरा कि इस तरह से ही हम वर्ग संघर्षों और जन संघर्षों की रक्षा कर सकते हैं और विकसित कर सकते हैं। यह बहुत ही जरूरी है और देश भर में ऐसी एक एकता कायम करने का आह्वान पार्टी ने किया है। कॉमरेडों! इस चुनाव के बाद स्थिति बहुत गंभीर हो गई है लेकिन यदि हम सही तरीके से अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करें तो हम जन आन्दोलन और वर्ग संघर्ष गठित कर सकते हैं और यही एकमात्र रास्ता है। जन आन्दोलन और वर्ग संघर्ष गठित करने के लिए व्यापकतम एकता-यह हमारा नारा होना चाहिए। आज इन शब्दों के साथ मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

एसयूसीआई(सी) जिन्दाबाद !

कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम !

अन्तर्राष्ट्रीयतावाद जिन्दाबाद !

सर्वहारा दृष्टिकोण पढ़ें और पढ़ायें।

लगातार इसके नये ग्राहक बनायें।

हिन्दी भाषी राज्य अपनी बकाया बिक्री राशि तुरंत जमा करायें।

सर्वहारा दृष्टिकोण के सभी पाठकों व पार्टी की राज्य कमेटियों से अनुरोध है कि पत्रिका का वार्षिक शुल्क/बिक्री राशि दिल्ली कार्यालय में तुरंत जमा करायें।

सर्वहारा दृष्टिकोण बैंक खाता नं.

1522000100360826 IFSC Code & PUNB 0152200,

पंजाब नैशनल बैंक, राजेन्द्र प्लेस शाखा, नई दिल्ली।

प्रबंधक, सर्वहारा दृष्टिकोण

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing :5 September, 2014

एसयूसीआई(सी) के आह्वान पर हरियाणा में हुई विशाल रैली

रोहतक के छोटूराम स्टेडियम में आयोजित रैली को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड सत्यवान

रोहतक, 31 अगस्त : शोषणहीन समाज बनाने का रास्ता पूंजीपतियों के दबदबे को तोड़ कर ही खुल सकता है। हर तरह के शोषण-अन्याय, अत्याचार, भेदभाव व भ्रष्टाचार को रोकने और जनजीवन की बुनियादी समस्याओं के समाधान के लिए एक जोरदार जनआन्दोलन की लहर खड़ी करनी होगी। यह कहना था एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय कमेटी सदस्य व राज्य सचिव कॉमरेड सत्यवान का। वे 31 अगस्त को छोटूराम स्टेडियम में हुई विशाल रैली को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, भूमि अधिग्रहण, टोल टैक्स, शिक्षा-चिकित्सा सेवाओं के निजीकरण-व्यापारीकरण, नशाखोरी-शराब की बिक्री, महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार, जातपात व साम्प्रदायिकता की समस्याएं भाजपा-नीत केन्द्र सरकार व कांग्रेस-नीत राज्य सरकार की जनविरोधी नीतियों के कुफल हैं।

केन्द्र सरकार से कांग्रेस के हट जाने के बाद भी हालात सुधरने की बजाय बदतर हुए हैं। देश की जनता की छाती पर बोझ बने बैठे हैं मुनाफाखोर शोषक पूंजीपति जिनके स्वार्थ की रक्षा के लिए सरकार चलाने में भाजपा ने कांग्रेस को भी पीछे छोड़ दिया है। सत्ता में आते ही मोदी सरकार ने रेल यात्री किराया व माल भाड़ा बढ़ा दिया है। किसानों की फसलों के बोनस देने पर रोक लगा दी है। डीजल का दाम निर्धारण पर सरकारी नियंत्रण हटा दिया है ओर हर महीने 50 पैसे महंगा किया जा रहा है। एफडीआई लागू करके बैंक, बीमा, रेल व प्रतिरक्षा उत्पादन क्षेत्र में विदेशी कम्पनियों की घुसपैठ बढ़ा दी है। एसईजैड, स्मार्ट सिटी, औद्योगिक गलियारे बनाने के नाम पर कम्पनियों को आसानी से सस्ती जमीन दिलाने के लिए नये भूमिअधिग्रहण कानून में फिर फेरबदल की जा रही है। पूंजीपतियों के स्वार्थ में श्रम कानूनों में मजदूर-विरोधी संशोधन किया जा रहा है। महंगाई उछाल मार रही है।

अपने भाषण में कॉ. सत्यवान ने स्पष्ट किया कि कांग्रेस और बीजेपी दोनों ही पार्टियां निजीकरण व भूमण्डलीकरण की हिमायती हैं जिनसे महंगाई, बेरोजगारी बढ़ रही है। कर्मचारियों की पेन्शन बंद कर दी गई है। चिनाई करने वाले कारीगर-मजदूरों को उनका हक नहीं मिल रहा है। मिड डे मील, आशा, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं व सफाई कर्मचारियों को न्यूनतम वेतन तक नहीं दिया जा रहा है। सरकार इन्हें अपना कर्मचारी ही नहीं मानती है।

कॉ. सत्यवान ने आगामी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को सत्ता से उखाड़ फेंकने और सत्तापिपासु भाजपा के मंसूबों को विफल करने का आह्वान करते हुए जनपक्षीय क्रान्तिकारी राजनीति को मजबूत करने की अपील की।

जनसभा की अध्यक्षता पार्टी के वरिष्ठ नेता कॉ. अनूप सिंह ने की। एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के राजय कमेटी सदस्यों कॉ. राजेन्द्र सिंह, रामफल, ईश्वर सिंह राठी ने भी सभा को सम्बोधित किया। वक्ताओं ने कहा कि कांग्रेस व भाजपा दोनों की नीतियों में कोई बुनियादी फर्क नहीं है। वोट बैंक के लिए दोनों ही जातपात, क्षेत्रवाद और साम्प्रदायिकता का इस्तेमाल करती हैं। भाजपा दूसरे धर्मों से कटुता रखती है और आरएसएस जैसे कट्टर हिन्दुत्ववादी साम्प्रदायिक संगठनों के साथ घी-खिचड़ी है। ये प्रतिक्रियावादी ताकतें समाज में रूढ़िवाद, कुसंस्कार, कट्टरता, अंधविश्वास और उग्र हिन्दूराष्ट्रवाद को हवा दे कर फासीवाद की जमीन तैयार कर रही हैं। विभिन्न बुर्जुआ दलों की मूल्यहीन और मौकापरस्त राजनीति का भी उन्होंने पर्दाफाश किया।

आगामी विधानसभा चुनाव में 10 जिलों की 14 सीटों पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के उम्मीदवारों के नामों की भी घोषणा की गई।

छत्तीसगढ़ राज्य छात्र संघ चुनाव में ए.आई.डी.एस.ओ. प्रत्याशी जीते

दुर्ग : दुर्ग जिले के साइन्स कॉलेज दुर्ग, कल्याण महाविद्यालय भिलाई व पाटन कॉलेज और कांकेर जिले के पखांजूर कॉलेज में ए.आई.डी.एस.ओ. के उम्मीदवार राज्य छात्र संघ के चुनाव में खड़े हुए। साइन्स कॉलेज दुर्ग व पखांजूर कॉलेज में ए.आई.डी.एस.ओ. की ऐतिहासिक जीत हुई। साइन्स कॉलेज दुर्ग में सहसचिव ए.आई.डी.एस.ओ. की प्रत्याशी निशा देशलहरे की जीत हुई। साथ ही साइन्स कॉलेज दुर्ग में एक कक्षा प्रतिनिधि, कल्याण महाविद्यालय भिलाई में आठ कक्षा प्रतिनिधियों और पखांजूर कॉलेज में सचिव पद पर ए.आई.डी.एस.ओ. ने निर्विरोध जीत हासिल की।

कॉमरेड राम जतन मौर्य लाल सलाम

कॉमरेड राम जतन मौर्य ग्राम कल्यानपुर, पोस्ट बरजी, जिला जौनपुर (उ.प्र.) के निवासी थे। 22 मई 2014 की सुबह 10 बजे मस्तिष्क-आघात (ब्रेन हैमरेज) बीमारी के कारण इलाहाबाद के एक निजी नर्सिंग होम में उनका निधन हो गया। कॉमरेड राम जतन मौर्य बीमारी के कारण सन् 2011 से पार्टी के कार्य करने में असमर्थ हो गये थे। इससे पहले वे पार्टी की उत्तर प्रदेश राज्य कमेटी एवं जौनपुर जिला कमेटी के सदस्य रहे थे और बीमारी के ठीक पहले तक महाराजगंज लोकल कमेटी के इंचार्ज भी थे।

एआईडीएसओ का तीसरा छात्र सम्मेलन

दिल्ली : शहादरा जोन का तीसरा छात्र सम्मेलन 3 अगस्त को सम्पन्न हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता संगठन के दिल्ली राज्य कमेटी सदस्य कॉ. मो. आसिफ ने की। खुले अधिवेशन में मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) के दिल्ली-गाजियाबाद स्थानीय कमेटी के प्रभारी कॉ. जी. एस. सिंह थे। सम्मेलन की शुरूआत में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। फिलस्तीन की गाजा पट्टी पर हुए इजरायली हमले में मारे गये मासूम बच्चों और निर्दोष लोगों के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।

प्रतिनिधि अधिवेशन में तीन प्रस्ताव विस्तृत चर्चा के बाद सर्वसम्मति से पारित किये गये।

मुख्य वक्ता एआईडीएसओ के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष कॉ. भास्करानंद ने शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण व फीस बढ़ोतरी के खिलाफ जोरदार छात्र आन्दोलन गठित करने का आह्वान किया। सम्मेलन में 16 सदस्यीय कमेटी गठित की गई जिसके अध्यक्ष कुनाल, उपाध्यक्ष प्रशांत व आशुतोष, सचिव पंकज, सचिवमण्डल सदस्य श्रेया, अशरफ, राहुल शर्मा व गौरव चुने गये।

प्रतिनिधि अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए कॉ. भास्करानंद

जघन्य निर्भया बलात्कार मामले में अरुण जेटली की अपमानजनक टिप्पणी की एआईएमएसएस ने की निन्दा

एआईएमएसएस की महासचिव कॉमरेड जयालक्ष्मी ने 25 अगस्त को जारी बयान में कहा : एआईएमएसएस की अखिल भारतीय कमेटी वित्तमंत्री और रक्षामंत्री अरुण जेटली के उस बयान की कड़ी निन्दा करती है जिसमें उन्होंने पूरे देश के जमीर को झकझोर देने वाली कष्टदायक निर्भया बलात्कार और हत्या की घटना को एक तुच्छ घटना बताया है। उन्होंने कहा था कि पूरी दुनिया में घटना का विज्ञापित होना भूमंडलीय पर्यटन के मामले में भारत को अरबों डालर का नुकसान पहुंचाने के लिए काफी था। उनके स्पष्टीकरण के बावजूद उनके बयान की कड़ी निन्दा की जानी चाहिए। इससे न केवल बलात्कार को एक तुच्छ अपराध मानने का उनका नजरिया झलकता है बल्कि यह महिलाओं की मर्यादा, उनकी रक्षा और सुरक्षा से बढ़कर व्यापारिक हितों के लिए उनके सरोकार को भी दर्शाता है।

बलात्कार जैसे एक गम्भीर मुद्दे पर मुलायम सिंह या तापस पाल जैसे विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के नेताओं की गैर जिम्मेदाराना टिप्पणियां अभी तक भी लोगों के जेहन में ताजा हैं जो अपराध को हल्का करती हैं और अपराधियों के हौसले बढ़ाती हैं। जैसाकि जस्टिस वर्मा कमीशन द्वारा सुझाव दिया गया था कि ऐसा एक कानून बनाने का समय आ गया है जिसमें संवैधानिक अधिदेश के विपरीत लिंग पक्षपात को बढ़ावा देने के लिए अपमानजनक मन्तव्य करने की वजह से चुने हुए प्रतिनिधियों को अयोग्य करार दिये जाने का प्रावधान हो।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. सत्यवान द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष: 011-25726631
Email : sarvaharadrishtikon@yahoo.com